18/05/2020

B.Ed. Ist year

Subject - Pedagogy of Commerce

Topic - Instructional objectives of Commerce Teaching

आधुनिक युग शैक्षिक तकनीकी का युग है। शैक्षिक तकनीकी का प्रभाव शिक्षण उद्देश्यों पर भी पड़ा है अतः आज हम शिक्षण उद्देश्यों के साथ-साथ अनुदेशक के उद्देश्यों को भी महत्व देते हैं।

वाणिज्य शिक्षण के अनुदेशनात्मक उद्देश्य

अनुदेशनात्मक उद्देश्यों पर सबसे पहले प्रो० बी० एस० ब्लूम ने व्यवस्थित विचार व्यक्त किये हैं। उनके अनुसार व्याख्या के आधार पर वाणिज्य शिक्षण के अनुदेशनात्मक उद्देश्य निम्नलिखित हो सकते हैं —

(1) ज्ञान :- वाणिज्य अनुदेशन का प्रथम उद्देश्य है छात्रों को वाणिज्य से सम्बन्धित विविध तत्वों, सिद्धान्तों, नियमों तथा प्रत्ययों का ज्ञान प्रदान करना है। साधारण पुनर्स्मरण, पुनर्पहचान तथा पुनर्उत्पादन इस उद्देश्य के तीन विशेषीकरण हैं।

(2) बोध :- बोध वाणिज्य अनुदेशन का दूसरा उद्देश्य है। छात्रों को वाणिज्य से सम्बन्धित तत्वों या तथ्यों का जो ज्ञान प्राप्त हुआ है, उस ज्ञान का अवबोध करना।

(3) ज्ञानोपयोग :- वाणिज्य शिक्षण का आगामी अनुदेशात्मक उद्देश्य छात्रों में ऐसी योग्यताओं का विकास करना है कि वह प्राप्त ज्ञान का बोध करने के बाद उसकी वास्तविक परिस्थितियों में प्रयोग कर सकें।

Scanned with CamScanner

4 → **कौशल** :- कम समय व श्रम के साथ अधिक तथा सुन्दर व शुद्ध उत्पादन कौशल है। इस उद्देश्य की प्राप्ति मे छात्र पुस्तपालन के विभिन्न नियमो का प्रयोग करके कुशलता के साथ शुद्ध प्रविष्टियाँ कर सकता है।

(5) **अभिवृत्ति** :- वाणिज्य विषय के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति का विकास करना भी वाणिज्य शिक्षण का एक प्राप्य या अनुदेशनात्मक उद्देश्य है। सकारात्मक अभिवृत्ति का विकास होने से विषय मे रूचि उत्पन्न होती है, लगन व प्रेरणा विकसित होती है।

(6) **सौन्दर्यानुभूति** :- यह वाणिज्य शिक्षण का शीर्ष उद्देश्य है। इस उद्देश्य की प्राप्ति पर छात्र मे वाणिज्य के विभिन्न सिद्धान्तो, नियमो, प्रत्ययो आदि का स्वतन्त्र एवं मौलिक रूप से नवीन परिस्थितियो मे प्रयोग करने की क्षमता उत्पन्न हो जाती है।

Continue.....

Scanned with CamScanner